सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 जून)

यूहन्ना 14:21 जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है: और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।

मसीह के साथ यह घनिष्ट सहभागिता और संगति हममें से प्रत्येक को मसीह की अपनी पवित्र आत्मा अधिक से अधिक प्रदान करे, ताकि संसार हमारे बारे में यह जान सके की, हम "यीशु के साथ" रह चुके हैं; और आइये हममें से प्रत्येक की प्रार्थना यह हो कि,

"प्रभु यीशु, आप मेरे लिए अपने आपको

एक जीवंत, प्रकाशमान हक़ीक़त बना दें!

आपकी संगती और सहभागिता,

विश्वास के दर्शन से भी अधिक, और,

देखी गई किसी भी सांसारिक वस्तु की तुलना में,

मेरे लिये और अधिक अन्तरंग हक़ीक़त बन जाये;

इस संसार के सबसे मधुर बंधन से भी,

अधिक प्रिय, अधिक अन्तरंग, और अत्यधिक करीब हमारा यह बंधन बन जाये। “`Z.'95-75` R1789:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 जून)

1 कुरिन्थियों 2:2 क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।

उन समर्पित लोगों को हमने ध्यान से देखा है, जिन्होंने "इस सुसमाचार" को छोड़कर अन्य विषय - वस्तुओं को उनका समय और ध्यान खींचने और उनमें डूब जाने की अनुमति दी है। वैसे लोगों के लिये हमारी सलाह यह है की, वे अपने समय और हुनर को सुसमाचार की सेवा में किफ़ायत से पूरी धुन के साथ खर्च करें। इनको बाकि सभी विषयों को छोड़ देना चाहिए, फिर चाहे वे विषय, अभी दूसरों के लिये कितने ही दिलचस्प क्यों न हों, और हमारे भविष्य के जीवन के लिये, जब सारा ज्ञान हमारा होगा, तब हमारे लिये कितने ही दिलचस्प क्यों न हों। जो कोई भी इस सच्चे और एकमात्र सुसमाचार की सेवा से, किसी टालने योग्य कारण से दूसरी ओर मुड़ जाता है, उनको हमने हमेशा देखा है की, उन लोगों को इस मार्ग से तुरंत हटा दिया जाता है या फिर उनको "हमारे स्वर्गीय बुलावे के इनाम" के मार्ग की ओर जाने में बहुत सी बाधाएं आती हैं। `Z.'95-116` R1811:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 जून)

भजन संहिता 19:1-4 आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें

करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं।

प्रतिदिन और हर रात को होनेवाले आकाश के शानदार प्रदर्शन को हमें परमेश्वर की प्रशंसा और आराधना करने के लिये उत्सुक करना चाहिए, और हमारे हृदयों को पवित्रता और श्रद्धापूर्ण भक्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए। आइये आकाश की शोर रहित गतिविधि, दिव्य व्यवस्था के प्रति आकाशमण्डल के सभी तत्वों की पूर्ण आज्ञाकारिता, और स्वर्गीय सेनाओं का आशीषित रूप से चमकते रहना, हमारे मन को उनके संपूर्ण पाठों से प्रभावित करे - बिना शोर-गुल या दिखावे के, पूरी धुन के साथ सभी कार्यों को करने का पाठ, जो सभी वस्तुओं को बहुत अच्छे से करते हैं, जो इतने बुद्धिमान हैं की कोई गलती नहीं कर सकते और इतने भले हैं की कभी निर्दयी नहीं हो सकते, उनकी इच्छा का सिद्धता से आज्ञापालन करने का पाठ; और आइये बदले में हम प्रभु की महिमा को जिसने हमें प्रकाशमान किया है, उनकी रोशनी को प्रत्येक देखनेवाले के ऊपर हममें से निकलकर चमकने दें। Z.'95-121 R1815:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 जून)

1 पतरस 1:7 और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।

अभी आपका विश्वास परखा जा रहा है। शांति के दिनों में,जब समर्थन का सूर्य आपपर चमक रहा था, आप शांतिपूर्वक सच्चाई के ज्ञान की नींव पर टीके थे, और मसीही चरित्र के भवन को अच्छे से बढ़ा रहे थे। अब आप गरम भट्टे की आग में परखने के लिये डाले गये हैं, इसीलिए सारी हिम्मत बांधकर, अपने धैर्य को दृढ़ करके, संयम से सहने के लिए खुद को तैयार करें, अपनी आशा को दृढ़ता से पकड़े रहकर, उन बहुमूल्य वादों को याद करें जो अब भी आपके हैं और "अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है"। "शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है"। "यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर", और विश्वास ने विजय प्राप्त कर ली है। Z.'95-135 R1823:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 जून)

भजन संहिता 31:1 हे यहोवा मेरा भरोसा तुझ पर है ...!

ऐसा कुछ भी नहीं है जो की एक मसीही को उसके शत्रुओं की उपस्थिति में ज्यादा हानि पहुंचाए, बजाये इसके की, वह विश्वास की लंगर पर अपनी पकड़ को, यहाँ तक की क्षणिक रूप से, जाने दे। अगर एक मसीही एक पल के लिए भी अपने विश्वास की लंगर पर अपनी पकड़ को जाने देता है, तब जरूर से अन्धकार उसको घेरने लगती है: वो पिता के चेहरे की चमक को देख नहीं पाता है, क्योंकि, "विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है"; और हालाँकि वह विश्वास की लंगर को फिर से पकड़ने के लिए कुश्ती लड़ता है,

लेकिन अन्धकार की शक्तियाँ साधारणतया उसकी मानवीय अपरिपूर्णताओं के आधार पर, सन्देह और डर के साथ उस पर विजय पाने लगती हैं। एक मसीही को अपने मन में हमेशा यह याद रखना चाहिए की उसकी देह की कमजोरियों को प्रभु यीशु की धार्मिकता की चादर के द्वारा ढका गया है, जिसे केवल विश्वास के द्वारा ही पहने रखा जा सकता है। यदि हमारे ह्रदय में परमेश्वर की शान्ति राज करती है, तब हमको परमेश्वर पर विश्वास की लंगर को कभी नहीं छोड़ना है, और "न ही शैतान के सबसे घातक वार को हमारे साहस को नीचे गिराने देना है।" हमारे ह्रदय की भाषा हमेशा यह होनी चाहिए, "वह मुझे घात करेगा, तब भी मैं उनपर भरोसा रखूँगा।" Z.'95-157 R1835:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 जून)

लूका 21:34 इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं।

हम महसूस करते हैं की कितना बड़ा काम हमारे सामने है, और यह भी की संयम, सतर्कता, दृढ़ता की कितनी ज्यादा आवश्यकता है! यह जीवन-भर का कार्य है, हमारे शरीर में घुसे हुए एक शक्तिशाली दुश्मन के विरुद्ध जीवन-भर चलने वाला संघर्ष है। बाहर की शक्तियां वास्तव में मजबूत हैं, लेकिन भीतर का गृह युद्ध अब तक सबसे ज्यादा खतरनाक है। अगर हम दुनिया की आत्मा के नशे में किसी भी मात्रा में आ जाते हैं; - अगर हम आत्म-संतुष्टि, सुख-सुविधा, पुराने स्वभाव की ईर्ष्या, द्वेष, घमंड,

व्यर्थ-महिमा, डिंग हाँकना, घमंड, क्रोध, कलह या ऐसी-ऐसी किसी भी चीजों की ओर थोड़ा भी मुड़ते हैं - तो हम कितने बड़े जोखिम की ओर जाते हैं! `Z.'95-201` R1859:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 जून)

1 पतरस 5:10 अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।

मसीह के अच्छे योद्धा के रूप में कठोरता को धीरज के सहने के माध्यम से ही इस मनचाही स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है - अर्थात, पूर्ण आत्म-नियंत्रण और बुराई का विरोध करने की क्षमता, स्थापित विश्वास, धैर्य और सद्गुण, मसीह में विश्राम में बने रहना, और उनके वादों के वचन के द्वारा आशा में बने रहना। जैसे - जैसे प्रेरित स्वामी की सेवा में पुराने होते गए, यह निस्संदेह उनका अपना अनुभव था, और यही हमारा अनुभव भी हो सकता है। आइये हम हर बीतते हुए वर्ष में अपने आपको महिमामय शिखर के अधिक से अधिक निकट पायें। `Z.'95-202` R1860:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 जून)

याकूब 5:20 … जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा।

जब हम दूसरों को निषेध रास्तों पर, अपराधियों के रास्ते में चलते हुए देखते हैं, तो हमें उनकी मदद करने के लिए वहां उनका पीछा नहीं करना है; बल्कि स्वयं सही मार्ग पर बने रहकर उनको सही मार्ग दिखाते हुए बुलाना है। जब हम देखते हैं कि कुछ लोग खुद को मनुष्यों के सिद्धांतों और शिक्षाओं के साथ भ्रमित कर रहे हैं, जो कि हम जानते हैं कि मूल रूप से गलत हैं, तो हमें उनकी मदद करने के लिये उन सिद्धांतों से होकर नहीं जाना है; बल्कि हमें उनको यह याद दिलाना है की कोई भी ऐसा सिद्धांत जो सच्चाई के मूल सिद्धांतों से मेल न खाये, उनपर ध्यान देना न केवल समर्पित समय को व्यर्थ करना है, बल्कि जिसके बारे में हम जानते हैं की यह गलत है, उसके लिए थोड़ा सा भी समय देना गलत और खतरनाक है, ठीक उसी प्रकार जैसे की विवेक और सच्चाई के सिद्धांतों का किसी भी प्रकार से उल्लंघन करना खतरनाक है। Z.'95-203 R1860:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 जून)

यूहन्ना 16:33 …संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है॥

प्रभु के प्रति विश्वासी लोगों के लिए सांसारिक समृद्धि का कोई पुरस्कार नहीं था, लेकिन इसके विपरीत - प्रभु के लोगों को मृत्यु तक आभाव और ताड़ना महसूस हुई ... जैसा की प्रभु यीशु के बारे में कहा गया है वे "दु:खी पुरूष थे, रोग से उनकी पहचान थी"; पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी; "वह धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल बन गए"; इतने कंगाल की उन्होंने कहा, "लोमडिय़ों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं"। और दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं हो सकता: यदि उन्होंने प्रभु को सताया है, तो वे हमें भी सतायेंगे; और तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी; अभी के समय में प्रभु यीशु के चेलों के लिए केवल एक ही इनाम है, जिनको की उनके चेले देख सकते हैं, और वह है पूरे ह्रदय से उनके प्रेम और मंजूरी की हार्दिक अभिव्यक्ति। Z.'95-207 R1862 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 जून)

लूका 11:1 …हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखायें।

संक्षेप में, हमारी प्रार्थनाओं को, परमेश्वर का ग्रहणयोग्य होने के लिए, दृढ़ विश्वास, प्रेमपूर्ण सम्मान और श्रद्धा, दिव्य योजना के साथ पूर्ण सहानुभूति और दिव्य इच्छा के प्रति समर्पण व्यक्त करना चाहिए, बच्चे की तरह परमेश्वर पर निर्भरता होनी चाहिए, दिव्य मार्गदर्शन और सुरक्षा के लिये विनम्रतापूर्ण लालसा के साथ अपने पापों और कमियों को स्वीकार करके क्षमा पाने की चाहत होनी चाहिए। ये सब हमेशा शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, लेकिन कम से कम आत्मा का दृष्टिकोण तो ऐसा ही होना चाहिए। `Z.'95-213` R1865:1 "प्रार्थना आत्मा की सच्ची चाहत है, बोलकर व्यक्त की गई हो या व्यक्त न की गई हो"। R5021 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 जून)

फिलिप्पियों 3:13 …हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं।

यदि कोई भी व्यक्ति यह मानता है कि उसने एक संतोषजनक आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली है, तो उस क्षण से वह अपने आत्मिक पतन की शुरुआत कर सकता है। कोई भी वर्तमान प्राप्ति मसीह के एक ईमानदार चेले के लिए संतोषजनक नहीं हो सकती है जो परिपूर्ण नमूने की नकल करने के लिए उत्सुकता से प्रयास करता है। आत्मसंतोष का अभ्यास केवल

तभी किया जा सकता है जब हम अपनी आँखों को मसीह से दूर करते हैं; क्योंकि जब हम खुद को परिपूर्ण नमूने की तुलना में देखेंगे तो अवश्य हमें हमारी कमियाँ हमेशा दिखाई देंगीं। और अगर हृदय के घमंड में हम उन कमियों पर से खुद की नज़र हटा लेते हैं, तो वे केवल दूसरों के सामने और अधिक प्रकट होती हैं। केवल मसीह की समानता में एक निरंतर उन्नति की प्राप्ति में ही एक मसीही को संतुष्टि मिलनी चाहिए। `Z.'95-250` R1885:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 जून)

फिलिप्पियों 3:13 ...परन्तु केवल यह एक काम करता हूं ...

इस वचन में हम प्रेरित के उद्देश्य की एकनिष्ठता को ध्यान से देखते हैं - "केवल यह एक काम करता हूं"। उन्होंने बहुत सारे कार्यों को करने की कोशिश नहीं की थी: यदि की होती तो निश्चय असफल हो गये होते। उन्होंने इस एक उद्देश्य के लिये जिसके लिये वे बुलाये गए थे, अपना सारा जीवन भक्ति से समर्पित कर दिया, और उस उद्देश्य को अंजाम देने के लिये अपने जीवन के हर एक दूसरे लक्ष्य को छोड़ दिया। हाँ, उन्होंने यह सच्चाई जानते हुए भी की उनका चुना हुआ मार्ग उनके वर्तमान जीवन में कुछ हानि, असुविधा, कठिन परिश्रम, चिन्ता, उत्पीड़न और लगातार तिरस्कार लाएगा, ऐसा ही किया। इस उद्देश्य के प्रति एकनिष्ठता

के कारण, वे वर्तमान जीवन की कुछ अच्छी वस्तुओं को चखने या उससे जुड़े भ्रमित करने वाले बुलबुलों के पीछे जाने की लालसाओं से मुक्त हो गये। Z.'95-250 R1885:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 जून)

भजन संहिता 17:15 … तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा।

“आओ अब हम इस समय की तुच्छ चिंताओं से ऊपर उठकर अपने विचारों को पंखो पर ऊँचा उढ़ाकर, पवित्र और अति पवित्र के बीच के परदे के पार जाकर अनन्त महिमा को देखें।“ आओ हमारा मन परमेश्वर और यीशु और पहले के और अभी के सभी काबिल संतों के ख्यालों से, स्वर्गीय विरासत के ख्यालों से, मसीह के साथ सहयोग करने के हमारे भविष्य के धन्य कामों के ख्यालों से, दिव्य योजना की भव्यता और उदारता के ख्यालों से और जब हमारे वर्तमान जीवन का कार्य पूरा हो जायेगा तब हमारे मसीह में इकठ्ठा होने की धन्य महिमा के ख्यालों से भर जाये और इन सब ख्यालों से हमारा ह्रदय प्रेरणा पाये। और आइये इन्हीं स्वर्गीय ख्यालों पर ध्यान करने के साथ साथ, हम परमेश्वर के साथ निजी संपर्क और मेलजोल का एक अतिरिक्त सुख और परमानन्द भी वचन की पढाई

और प्रार्थना के द्वारा और स्तुति - आराधना करने के लिये सबके साथ इकठ्ठा होने के द्वारा प्राप्त करें। Z.'95-251 R1885:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 जून)

1 पतरस 5:5 … परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।

प्रियों, लगभग सब कुछ के ऊपर, आइये हम अपनी विनम्रता की अच्छी तरह से रक्षा करें। केवल जब हम अपनी दृष्टि में कम होते हैं तभी परमेश्वर हमारी सुरक्षा के साथ हमें उपयोग कर सकते हैं। और फिर भी वह वफ़ादारी की हर परीक्षा से हमें नहीं बचाते हैं। इसलिए प्रभु आपको यदि आज थोड़ा सी उन्नति देते हैं, तो उनकी सेवा में सफलता के इस छोटे से प्रोत्साहन को विनम्रतापूर्वक प्राप्त करें, दीनता के साथ, अपनी स्वयं की अयोग्यता और अपर्याप्तता को याद करके, क्योंकि परमेश्वर आपके माध्यम से काम करने की कृपा करते हैं; और आपके अनुशासन और आपके चरित्र के उचित संतुलन के लिए, कल के अपमानों को प्राप्त करने के लिए तैयार रहें। अगर कल की सफलता आपको आज के अपमान के तहत झल्लाहट में डालती है, तो सावधान हो जायें! आप आत्मिक रूप से उतने विकसित नहीं हैं जितना कि आपको होना चाहिए। `Z.'96-19` R1920:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 जून)

यशायाह 55:3 ...और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।

वे सभी जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, जिनकी आत्माएं परमेश्वर के लिए प्यासी हैं, जैसे की हिरण नदी के किनारे पानी के लिए प्यासा होता है, और जिन्होंने प्रभु को पाने के बाद, अपने आप को उन्हें समर्पित कर दिया है और पवित्र आत्मा के अभिषेक को पाया है, आत्मा आप ही उनके साथ मिलकर यह गवाही देता है कि, वे परमेश्वर के पुत्र हैं, और वे अभिषेक किये गए पुत्र के रूप में, अपने आप में सच्चे पुत्रों के योग्य गुण खोज सकते हैं - जैसे की वफादारी, विश्वसनीयता, उत्साह, ऊर्जा, साहस, सही और गलत में अन्तर करने की आत्मा, आदि, - ये लोग उस विभाग का गठन करते हैं जिनके साथ प्रभु ने सदा की वाचा बाँधी है और जिनके लिये "दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा" है। Z.'96-29 R1936:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 जून)

इब्रानियों 12:11 वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

इस तरह के अनुशासन के तहत आत्मा प्रेमभरे समर्पण के लिये पिघल जाती है और शांति से कहती है, मैं मसीह के द्वारा जो मुझे सामर्थ्य देता है सभी चीजें कर सकता हूं, सभी चीजों को सहन कर सकता हूं। जैसे-जैसे धीरे-धीरे पुराने स्वभाव का मैल भस्म होता जाता है, और चरित्र का सोना अधिक से अधिक प्रकट होता जाता है, ये बहुमूल्य आत्माएं अपने प्यारे प्रभु को और भी अधिक प्रिय हो जाती हैं। ये लोग प्रभु को इतने प्यारे होते हैं कि उनके हर दुख में वे अपने अनुग्रह के साथ इन्हें बनाये रखने के लिये, इनके निकट रहते हैं और उन्हें अपनी उपस्थिति से खुश करते हैं, और दुःख के गहरे क्षण स्मृति के सबसे पवित्र विश्राम स्थल बन जाते हैं, जहाँ दिन का तारा सबसे चमकदार होता है। `Z.'96-44` R1944:4
आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 जून)

मलाकी 3:2,3 परन्तु उसके आने के दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग ... के समान है, वह रूपे का ताने वाला और शुद्ध करने वाला बनेगा।

हमारे महान सोनार प्रभु यीशु यह ध्यान से देख रहे हैं कि आपके चरित्र की कीमती धातु उनकी छवि को कैसे दर्शाती है। या, साधारण भाषा में, हर परीक्षा में प्रभु यह देखते हैं कि हमारे कार्यों को क्या प्रभावित करता

है, चाहे वे वर्तमान लाभ का प्रभाव हो, या सांसारिक सिद्धांत, या व्यक्तिगत मित्रता, या सांसारिक प्रेम - पति, या पत्नी, या बच्चों का, या सुख का प्रेम, या किसी भी कीमत पर शांति पाने की चाहत, या फिर, दूसरी ओर, हमें सत्य और धार्मिकता के स्पष्ट सिद्धांतों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है; और क्या हम श्रम या पीड़ा, या दोनों की किसी भी कीमत पर उत्साह और ऊर्जा के साथ इन सिद्धांतों की रक्षा करेंगे, और इसलिए कड़वे अंत तक विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ेंगे - यहां तक कि मृत्यु तक। `Z.'96-45` R1944:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 जून)

भजन संहिता 16:11 …तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥

परमेश्वर की उपस्थिति में हम चाहें जहाँ भी हों आनंद की भरपुरी है। आइये हम परमेश्वर से जान - पहचान बढ़ाएँ। प्रार्थना में परमेश्वर के निकट आएँ, उनके अनमोल वचनों की पढाई के द्वारा, उनकी भलाई पर ध्यान करके, उनकी दिव्य देखभाल के द्वार, हमारे निजी अनुभवों में उनके द्वारा प्रगट किये गए अनुग्रहों के द्वारा और उनके बहुमूल्य वादों के द्वारा जो कि प्रभु यीशु मसीह में हाँ और आमीन हैं। इसलिये याकूब 4:8 वचन के अनुसार परमेश्वर के निकट आओ तो वो भी तुम्हारे निकट

आयेगा। परमेश्वर खुद को तुम्हारे ऊपर प्रगट करेंगे और अपना घर हमारे साथ बनाएंगे। निश्चित रूप से ये परमेश्वर की इच्छा है कि उनके सभी बच्चे प्रभु में आनंदित रहें और सदा आनंदित रहें, और यदि कोई है जिसके पास ये आशीष नहीं, तो वह अपने विशेषाधिकारों से नीचे जी रहा है। (परमेश्वर की संतान होने के नाते परमेश्वर की निश्चित मर्जी के अनुसार उनमें आनंदित रहना, सदा आनंदित रहना हमारा विशेषाधिकार है और यदि हमें सदा आनंदित रहने की आशीष नहीं है, तो हम अपने अधिकार से कम में नीचे में जी रहे हैं।) `Z.'96-45` R1944:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 जून)

भजन संहिता 97:11 धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मन वालों के लिये आनन्द बोया गया है।

परमेश्वर का सच्चा बच्चा सत्य से प्रेम करता है क्योंकि उसको सत्य से लगाव है... जब उन्होंने सत्य को पा लिया है, तब वे इस सत्य को पहचानते हैं और इस सत्य का मूल्य समझते हैं, और उस पर ध्यान करते हैं... वे बोलते हैं, की ये सत्य परमेश्वर के जैसा है: ये सत्य परमेश्वर की महिमा वाली अच्छाई को प्रगट करता है, उनके प्रेम, परोपकार, बुद्धि और न्याय वाले चरित्र का प्रतिबिम्ब है। और इसलिए वे सत्य और परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जिन्होंने उनको ये सत्य दिया है: वे इस सत्य को अपने हृदय

में ख़ज़ाने की तरह रखते हैं और इस पर बार बार ध्यान पूर्वक अध्ययन करते हैं; और जब वे इस सत्य की ओर देखते हैं, तब इसके हर एक गुण और सुन्दरता के प्रति आभार प्रकट करते हैं, और वे ज्यादा से ज्यादा अपने चरित्र को सत्य और उसकी सुन्दरता के मुताबिक ढ़ालने की कोशिश करते हैं और यही खोजते हैं की वे अपने चरित्र को वचन और व्यवहार के मुताबिक दूसरे के सामने पेश कर पाएं, ताकि वे भी इस सत्य के द्वारा आशीष पाएं। Z.'96-55 R1950:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 जून)

1 यूहन्ना 2:15 तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।

दुनिया के साथ संगति करने का मतलब है, उसकी सोच और उसके मार्गों के साथ तालमेल रखना। इस नज़रिए से, हमें दुनिया से और उसके मार्गों से प्रेम नहीं करना है, बल्कि उससे दूर रहना है और उसके विरोध में रहना है। जो मार्ग हमारे लिये नियुक्त किया गया है, कुछ मायनों में, कम से कम, एक कठिन मार्ग है, एक अकेलेपन वाला मार्ग है, पर केवल यही मार्ग है जिसमें हमें शान्ति और आनंद मिल सकता है। यह संसार उसकी लालसाओं के साथ बहुत तेजी से खत्म हो रहा है: ये लालसा खोखली है और कभी न संतुष्टि देने वाली लालसा है और अन्त में ये हमें सर्वनाश

और बर्बादी की ओर ले जाती है; पर जो प्रभु के मार्गों से आनन्दित होते हैं, वैसे लोगों के पास प्रभु की धन्य सहभागिता और संगती होती है। उनका आनन्द एक ऐसे स्रोत से आता है जिसे ये दुनिया नहीं समझ सकती है। वैसे लोग ऊंचे सतह पर रहते हैं, शुद्ध हवा में सांस लेते हैं, और परमेश्वर और प्रभु के साथ एक पवित्र, मिठास से भरी मित्रता का आनन्द लेते हैं, जो की ये दुनिया हमें कभी भी नहीं दे सकती। Z.'96-67 R1956:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 जून)

मत्ती 11:29 …मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं…।

वाकई में, एक नम्र और शांत आत्मा में ही सुकून का रहस्य है। नम्र होना, धीरज के अनुग्रह में बढ़ना है; परमेश्वर की इच्छा के प्रति प्रेमपूर्ण समर्पण करना है; उनके प्रेम और देखभाल में विश्वास करना है और उनके मार्गदर्शन वाले ज्ञान और वश में कर लेने वाले प्रावधानों पर विश्वास करना है; और दुर्नाम और सुनाम के माध्यम से अथवा अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों के माध्यम से लगातार इस मार्ग का अनुकरण करना है। परमेश्वर के प्रिय बच्चों को ज्यादा से ज्यादा मसीह की नम्र और शांत की आत्मा की नकल करने की खोज करनी चाहिए, परमेश्वर के प्रावधानों को स्वीकार करते हुए और उनके उपदेशों के प्रति आज्ञा पालन दिखाते हुए, जैसा की प्रभु यीशु

ने किया था, उनकी सामर्थ्य से लैस होकर जो केवल परमेश्वर हमें दे सकते हैं, और ऐसा वे करेंगें भी, खासकर उनके लिए जो प्रभु यीशु का जुआ अपने ऊपर लेते हैं और उनसे सीखते हैं। Z.'96-79 R1962:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 जून)

1 कुरिन्थियों 4:2, मत्ती 25:15 फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले ... हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया।

मुहरों के दृष्टान्त में सबको समान मुहर का दिया जाना उचित रूप से परमेश्वर के उस दिव्य अनुग्रह की आशीष को दर्शाता है जो सबके लिये समान है, यानि की - धर्मी ठहराया जाना। अन्य दिव्य दान मात्रा में भिन्न होते हैं, हमारे प्राकृतिक अवसरों के अनुसार, और आम तौर पर पिता के होते हैं, - उदाहरण के लिए, वचन और आत्मा। हमें धर्मी ठहराने की योजना हालाँकि पिता ने बनाई थी, लेकिन यह यीशु से मिला उपहार है, क्योंकि यीशु ने इसके लिए अपने खुद के अनमोल लहू की कीमत दी है। सबको एक समान मुहर का मिलना सबको एक समान आधार देता है, जिससे की सब ग्रहणयोग्य दास बन जाते हैं, और इसके कारण सबको अपना उत्साह अपने बलिदानों के द्वारा दिखाने की अनुमति मिल जाती है। लेकिन "तोड़ों" का हर एक व्यक्ति की क्षमता के अनुसार बाँटा जाना, यह दर्शाता है की परमेश्वर की सेवा के अवसर

हमारी क्षमताओं के अनुसार हमें दिए जाते हैं। वे तोड़े शिक्षा, या धन, या प्रभाव, या अच्छे स्वास्थ्य, या समय, या चतुरता, या प्रतिभावान होने के हुनर हो सकते हैं, जिन्हें परमेश्वर की सेवा में अवसरों के अनुसार उपयोग में लाया जा सकता है। `Z.'96-99` `Z.'07-63` R1972:6 R3948:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 जून)

मत्ती 13:23 जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

फल लाने की विभिन्न मात्राएँ - तीस, साठ और सौ गुना, या दस तोड़े और पाँच तोड़े, अनुग्रह के साधनों के उपयोग में अविश्वसनीयता के बजाय, जय पाने के लिए आनेवाली बाधाओं में अन्तर को दर्शाता है। कुछ लोग छोटे परिणामों के लिए लंबे समय तक और परिश्रम से काम करते हैं, जबकि दूसरे लोग समान प्रयास के साथ अधिक दृढ़ इच्छाशक्ति और अधिक निरंतरता के कारण ज्यादा बड़ी चीजों को प्राप्त करते हैं। कुछ लोग फिसलने और पुनः पतन के कारण, जिससे की वे बाद में संभल जाते हैं, समय और अवसर खो देते हैं, जिसे कभी वापस नहीं पाया जा सकता है, हालाँकि उन्हें क्षमा कर दिया जाता है और उदारता के साथ दिव्य समर्थन में फिर से वापस स्थापित कर दिया जाता है, और वहाँ से

वे फिर से अंत तक लगन और धीरज से दौड़ते हैं। `Z.'96-99` R1973:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 जून)

रोमियो 8:17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं।

जब हम हमारे लिए पिता की योजनाओं को पढ़ते हैं, तो हमारे स्वामी प्रभु यीशु के साथ परमेश्वर के बर्ताव की रौशनी में हम पिता की इच्छा को देखकर, एक ही बार में यह निश्चय कर सकते हैं की, पिता की हमारे लिए यह इच्छा नहीं है की वह हमें सभी पीड़ा और परीक्षा और कष्टों से दूर रखें और हमें विजयी रूप से सहजता के फूलों के बिस्तरों पर महिमा की ओर ले जाएँ। वास्तव में, हमारा मार्ग इससे विपरीत होना चाहिए, यदि हम उनके पदचिन्हों पर चलें, जिन्होनें न केवल सारे जगत के पापों के लिये बलिदान किया बल्कि जो कलीसिया, जो की उनकी देह है, उसके लिये आदर्श भी ठहराए गए हैं। और परमेश्वर की योजना और उनकी इच्छा के बारे में इतना कुछ जानने के बाद हम तुरन्त यह सीखते हैं की, हमें दर्द और परेशानी से मुक्ति की न तो उम्मीद करने चाहिए और न ही इनसे छुटकारा माँगना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी बुद्धिमत्ता

के अनुसार इसे हमारी महिमा का मार्ग ठहराया है। `Z.'96-151` R2000:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 जून)

कुलुस्सियों 4:2 प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो।

विश्वास और धीरज की हर परिक्षा, परमेश्वर के द्वारा वादा की गई मदद को पाने के लिये, उनसे प्रभु यीशु के द्वारा प्रार्थना करने का एक अवसर है। जीत प्राप्त करने की हर असफलता परमेश्वर से माफी मांगने के लिए प्रार्थना का एक अवसर है, और साथ ही दिव्य आशीष पाने का भी एक अवसर है, ताकि हम अपनी कमजोरी का पाठ गहराई से समझ सकें, ताकि अगली समान परीक्षा में हम तुरंत परमेश्वर से प्रभु यीशु के द्वारा प्रार्थना कर सकें और वह "वह अनुग्रह पाएं" जिसका वादा परमेश्वर ने हमको किया है और उस पर पकड़ बना सकें। स्वयं पर पाई गई हर विजय, प्रार्थना के लिए एक अवसर है, जिससे की विजय की सफलता हमारे मन में घमण्ड न पैदा कर सके और न ही हमको फूला सके, लेकिन हमको नम्र रखे ताकि हम हमारे महान विरोधी शैतान के अगले हमले के लिए सतर्क रहें। सत्य के लिए हर सेवा, हमारे महान राजा की सेवा करने और परमेश्वर को प्रभु यीशु के द्वारा प्रार्थना में धन्यवाद देने का एक अवसर है, और संभवतः प्रभु के कारणों के लिए कुछ दुःख उठाने का अवसर है; और सेवा के लिए आगे के अवसरों को पाने और उन्हें बुद्धिमानी

से उपयोग करने का अनुग्रह पाने के लिए विनती का एक कारण बन जाता है। Z.'96-163 R2006:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 जून)

इब्रानियों 3:1 इसलिए हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।

ये परमेश्वर की इच्छा है कि, "मसीह की देह" के हर एक सदस्य को दुनिया की दुर्बलताओं की भावना छू जाए, ताकि वे जब परमेश्वर के राज्य में ऊंचे किए जाएँ, वे बहुत संवेदनशील हों, सहानुभूति प्रगट करने वाले और उदार हों, जब वे शाही याजक के रूप में, पूरी दुनिया का न्याय करेंगे। हमारे प्रभु और स्वामी, जिनके अन्दर कोई भी अपरिपूर्णता नहीं थी जो की ये गिरी हुई मानवजाति के अन्दर है, बल्कि हमारे महायाजक पवित्र थे, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग थे, तब भी उन्हें मनुष्यों की बिमारियों और निर्बलताओं को खुदपर लेकर उठाना पड़ा, ताकि वे हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी हो सकें, और एक विश्वासी महा याजक बन सकें। हमारी ओर से यह मान लेना पूरी तरह से तर्कहीन होगा कि, महायाजक के कार्यालय और सेवा की तैयारियों के लिये जिन पाठों की आवश्यकता थी, सह - याजक को उनकी कोई आवश्यकता नहीं है, जिन्हें प्रभु के साथ दुःख उठाने और उनके साथ राज्य करने के लिये बुलाया गया है। Z.'96-208 R2029:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 जून)

2 कुरिन्थियों 1:21,22 और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है, जिसने हम पर छाप भी कर दी है…॥

हमारे अन्दर जो नई सृष्टि है, उसकी मुहर या चिन्ह है, की हमारे अन्दर मसीह की आत्मा है। मसीह की पवित्र आत्मा का हममें प्रगट रहना तीन तरीके से हो सकता है, (1) परमेश्वर के प्रति सर्वोत्तम प्रेम रखना है और उनके कारणों के प्रति आनन्दित होते हुए वफ़ादारी रखनी है, यदि हमें उनके कारणों के लिए दुःख भी उठाना पड़े। (2) भाइयों के प्रति बिना स्वार्थ, श्रेष्ठ और शुद्ध प्रेम रखना है -- उनके भलाई की इच्छा रखनी है, और हमेशा उनकी अच्छाई के लिए सतर्क रहना है। (3) दुनिया के प्रति प्रेम, सहानुभूति रखनी है, तत्परता से अच्छे कार्यों के लिए जैसा अवसर मिले और जितना हम कर पाएं, और सब के साथ शान्ति के साथ रह पाएं उसकी इच्छा रखनी है और कोशिश करनी है। Z.'96-212 R2032:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 जून)

नीतिवचन 3:7 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।

परमेश्वर के बच्चे के लिए अपने आप से संतुष्ट होना बहुत ज्यादा खतरनाक है: और अपने आप से संतुष्ट होना उसकी सही रूप से बढ़ोतरी और उसके मन के बदलाव में बाधा देता है, और दूसरों के लिए वो परमेश्वर का बच्चा किस तरह उपयोगी हो सकता है उसमें भी उसे अड़चन करता है, और खासकर उसकी उपयोगिता परमेश्वर की सेवा में; क्योंकि परमेश्वर के वचन कहते हैं, -- "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है"। खुद पे आत्म विश्वास के बजाये, ज्ञान बताता है की खुद पर भरोसा नहीं करना है, हमें अपनी कमजोरी और अपरिपूर्णताओं को याद रखना है, और इस तरह से परमेश्वर का ज्यादा पवित्र डर रखना है और उन्हीं पर निर्भर रहना है, क्योंकि ऐसा करना ही हमें मजबूत करेगा और योग्य बनाएग की हम बुराई से दूर रहें जो हमारे इस गिरे हुए शरीर में है। Z.'96-263 R2060:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 जून)

मत्ती 5:8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

इस वचन में "मन की शुद्धता" का मतलब न तो व्यवहार की, न शब्द की, न विचार की शुद्धता है, बल्कि इन सबसे जुड़े हमारे इरादों की शुद्धता है। हमारी इच्छा और हमारा प्रयास अवश्य परिपूर्णता के लिए

होना चाहिए - विचार, शब्द और कार्य में परिपूर्णता के लिए। हमारे सामने जो स्तर है, जिसे हमारे मनों और इच्छाओं को अवश्य मान लेना है, वो एक दिव्य स्तर है, "इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥" (मत्ती 5:48) परमेश्वर ने इस परम सिद्धता के अलावा कोई और नीचा स्तर निर्धारित नहीं किया है, बल्कि उन्होंने हमें मसीह के द्वारा अनुग्रह, दया और शांति दी है, यदि हम प्रभु यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलेंगे - तो मन की यह शुद्धता इस सकेत मार्ग के बहुत से कदमों में से एक अनिवार्य कदम है। Z.'00-71 R2587:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 जून)

मत्ती 13:30 कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा कि पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गट्ठे बाँध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो॥

समय कम है; कटनी का काम बहुत है; मजदुर थोड़े हैं; हमारा समय समर्पित है; हमें उनके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता; हमने अपने जीवन को प्राण देने तक समर्पित कर दिया है; हमें हमारे महान प्रभु ने कटनी के कार्य के लिये नियुक्त किया है ताकि हम सच्चे गेहूँ को खोजकर उनके खत्ते में इकठ्ठा करें; हमारे पास छिछोरापन के लिए या दुनियादारी के

लिये या कई सामाजिक सुविधाओं के लिये समय कहाँ हैं? बल्कि हमें अवश्य इन वस्तुओं के प्रति बहुत कम ध्यान देकर खुद को संतुष्ट रखना है, और निशाने की ओर दौड़ते चले जाना है; जो कार्य हमें सौंपा गया है उसमें पुरे मन से रम जाना है; ताकि हम अपने स्वामी की पूरी स्वीकृति पा सकें, वो हमसे ये कहें "शाबाश! मेरे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तुमने बहुत अच्छे से ये काम किया"। Z.'00-234 R2675:2 आमीन